

Bhaktamar Stotra Mahima

श्री भक्तामर का पाठ, करो नित प्रातः,
भक्ति मन लाई, सब संकट जाये नशाई ॥

जो ज्ञान-मान-मतवारे थे, मुनि मानतुंग से हारे थे।
उन चतुराई से नृपति लिया, बहकाई । सब संकट जाये नशाई ॥1॥

मुनि जी को नृपति बुलाया था, सैनिक जा हुक्म सुनाया था,
मुनि वीतराग को आज्ञा नहीं सुहाई । सब संकट जाये नशाई ॥2॥

उपसर्ग घेर तब आया था, बलपूर्वक पकड़ मंगवाया था,
हथकड़ी बेड़ियों से तन दिया बंधाई । सब संकट जाये नशाई ॥3॥

मुनि काराग्रह भिजवाए थे, अड़तालीस ताले लगाये थे,
क्रोधित नृप बहार पहरा दिया बिठाई । सब संकट जाये नशाई ॥4॥

मुनि शान्तभाव अपनाया था, श्री आदिनाथ को ध्याया था,
हो ध्यान मग्न भक्तामर दिया बनाई । सब संकट जाये नशाई ॥5॥

सब बंधन टूट गए मुनि के, ताले सब स्वयं खुले उनके,
काराग्रह से आ बाहर दिए दिखाई । सब संकट जाये नशाई ॥6॥

राजा नत होकर आया था, अपराध क्षमा करवाया था
मुनि के चरणों में अनुपम भक्ति दिखाई । सब संकट जाये नशाई ॥7॥

जो पाठ भक्ति से करता हैं, नित ऋषभ-चरण चित धरता हैं,
जो ऋद्धि-मंत्र का, विधिवत जाप कराई । सब संकट जाये नशाई ॥8॥

भय विघ्न उपद्रव टलते हैं, विपदा के दिवस बदलते हैं,
सब मन वांछित हो पूर्ण, शान्ति छा जाई । सब संकट जाये नशाई ॥9॥

जो वीतराग आराधन हैं, आत्म उन्नति का साधन हैं,
उससे प्राणी का भव बन्धन कट जाई । सब संकट जाये नशाई ॥10॥

कौशल' सुभक्ति को पहिचानो, संसार-द्रष्टि बंधन जानो,
लौ भक्तामर से आत्म-ज्योति प्रगटाई । सब संकट जाये नशाई ॥11॥